International Journal of Education and Science Research Review

E-ISSN 2348-6457

Volume-9, Issue-4 July-August-2022 P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता का अध्ययन

सिमरन चौधरी

शोधार्थी

शिक्षा विभाग

मालवांचल विश्वविद्यालय

इंदौर, मध्यप्रदेश।

डा.प्रियंका बंसल

शोध निर्देशिका

शिक्षा विभाग

मालवांचल विश्वविद्यालय

इंदौर, मध्यप्रदेश।

परीक्षा आधुनिक शिक्षा में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह छात्रों की उपलब्धि स्तर या समझ के स्तर को जानने का एक माध्यम है। परीक्षा के द्वारा छात्रों के ज्ञान और कौशल का मूल्यांकन किया जाता है और यह उन्हें अपनी कमजोरियों से उबरने का अवसर प्रदान करती है। छात्रों के किसी विशेष विषय में ज्ञान, उपलब्धि और कौशल की जांच के लिए इस तकनीक का उपयोग किया जाता है। यह एक प्रभावी और व्यवस्थित तरीका है, जो हमें छात्रों के ज्ञान और सीखने की क्षमता को मापने में मदद करता है।

परीक्षा छात्रों के व्यक्तित्व और आत्मविश्वास को विकसित करने में सहायता करती है, क्योंकि यह उनके बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती है। परीक्षा के माध्यम से छात्रों में कुछ आवश्यक गुण विकसित होते हैं, जैसे मेहनत, धैर्य, रचनात्मकता और नेतृत्व क्षमता, जो जीवन भर उपयोगी होते हैं। यह छात्रों को उनकी कमजोरियों पर नियंत्रण पाने और जीवन में सफल होने में सक्षम बनाती है। परीक्षा हमें यह जांचने में मदद करती है कि हमने कितना समझा और हम कितने सक्षम हैं। यह व्यक्ति की स्मरण शक्ति को भी बढ़ाने में सहायक होती है।

परीक्षा छात्रों को उनके ज्ञान को व्यक्त करने का अवसर देती है। यह लेखन कौशल को निखारती है और छात्रों के विश्लेषणात्मक कौशल को सुधारती है। इसलिए, परीक्षा एक ऐसी तकनीक होनी चाहिए जो व्यक्ति के करियर को विकसित करने में मदद करे।

परीक्षा देना आवश्यक है क्योंकि यह छात्रों को एक उद्देश्य या लक्ष्य प्रदान करती है, जिसके बिना वे यह नहीं समझ पाते कि वास्तव में उन्हें क्या पाना है। परीक्षा उन्हें विषय के बारे में अपनी समझ की जांच करने में मदद करती है, पुनरावलोकन के माध्यम से सही ढंग से सीखने में सहायता करती है, और उनके मस्तिष्क को सक्रिय करती है। यह छात्रों को यह सिखाती है कि समय सीमा के भीतर अपने सीखने की प्रक्रिया को कैसे प्रबंधित करें और सीखने के दौरान शांत कैसे रहें।

परीक्षा का शिक्षण प्रक्रिया और शैक्षणिक संस्थानों में महत्वपूर्ण स्थान है। परीक्षा के बिना अधिकांश छात्र पूरी तरह से नहीं सीखते। वे केवल अपने रुचि वाले विषयों को पढते हैं और उन विषयों को नजरअंदाज कर देते हैं जो उन्हें कठिन लगते हैं, बिना यह समझे कि उन विषयों का जीवन में क्या महत्व है। परीक्षाओं के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि छात्र ने कौन—कौन सी परीक्षाएं पास की हैं, जिससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि वह किस प्रकार के कार्यों के लिए योग्य है।

अंतिम परीक्षा का दिन छात्र के जीवन में उत्साह से भरा होता है। वह परीक्षा की तैयारी अच्छे से करता है और उस दिन उसे अपने प्रदर्शन को लेकर डर और उम्मीद दोनों होती हैं। इस स्थिति में, हर छात्र इस बात को लेकर चिंतित महसूस करता है कि वह प्रश्न पत्र को आसानी से हल कर पाएगा या नहीं।

परीक्षा हमें बहुत कुछ सिखाती है और हमें अपनी सोच को व्यक्त करने, समय प्रबंधन, लेखन कौशल और समय की पाबंदी जैसे गुणों का प्रशिक्षण देती है। छात्रों के वास्तविक ज्ञान को समझने और उन्हें अध्ययन के लिए प्रेरित करने के लिए परीक्षाएं आवश्यक हैं। परीक्षा के बिना, छात्रों को पढ़ाई के प्रति प्रेरित करना और उनकी प्रगति का आंकलन करना बहुत कठिन हो जाएगा।

दुश्चिंता की वैचारिक रूपरेखा

डर, घबराहट, असहजता, आशंका, चिंता और भय को मिलाकर दुश्चिंता कहा जाता है। इनमें से कुछ स्थितियां औचित्यपूर्ण होती हैं, जैसे प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेना, परीक्षा देना या प्रियजनों की दुश्चिंता करना।

कैटल (1966) के अनुसार, 'दुश्चिंता सभी अधूरी आवश्यकताओं की तीव्रता और उनकी पूर्ति की अनिश्चितता का परिणाम होती है। सीधे शब्दों में कहें तो दुश्चिंता इनाम की अनिश्चितता या संपूर्ण आवश्यकता पूर्ति की अनिश्चितता के समान होती है।'

दुश्चिंता का असर उस व्यक्ति की नींद और अन्य शारीरिक क्रियाओं पर पड़ता है जो इसे महसूस करता है। किशोरों में यह विशेष रूप से देखा जाता है, क्योंकि वे भावनात्मक समस्याओं के लक्षण के रूप में अधीरता के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। दुश्चिंता भी उनकी इन समस्याओं में शामिल होती है।

दुश्चिंता वह भावना है जो परिस्थितियों के उत्तेजक प्रभाव के कारण उत्पन्न होती है। यह स्थिति घबराहट, आशंका, भयपूर्ण अनुमान और विभिन्न शारीरिक परिस्थितियों से पहचानी जाती है। इस स्थिति में व्यक्ति भय और दुश्चिंता के बीच अंतर को भी महसूस करता है।

दुश्चिंता के लक्षण

किसी भी तनावपूर्ण स्थिति में एक छात्र या विद्यार्थी निम्नलिखित शारीरिक परिवर्तनों को दिखा सकता है— पसीना आना, पेट में दर्द, उल्टी होना, सिरदर्द, तेज दिल की धड़कन या नाड़ी की गति एवं कठोरता आदि

परीक्षा संबंधी दुश्चिंता

परीक्षा संबंधी दुश्चिंता एक प्रकार की दुश्चिंता है, जो परीक्षा के दौरान या प्रदर्शन की स्थिति में महसूस की जाती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति पर अच्छा प्रदर्शन करने का दबाव होता है। शैक्षिक प्रणाली में अधिकांश विद्यार्थी परीक्षा के समय या उससे पहले किसी न किसी स्तर की दुश्चिंता का अनुभव करते हैं। इस प्रकार की दुश्चिंता विद्यार्थी के परीक्षा प्रदर्शन को प्रभावित करती है, जिससे यह विद्यार्थियों के लिए एक समस्या बन गई है।

प्रस्तुत शोध का औचित्य

किशोरावस्था वह समय है, जब बढ़ती मानसिक क्षमताएँ और बेहतर समझ उनके आत्म—प्रत्यय को नई दिशा देती हैं। इस अवस्था में किशोर स्वयं को कुछ अनोखा करने में सक्षम महसूस करते हैं, कुछ ऐसा जो दूसरों ने अब तक नहीं किया हो या कम से कम कुछ ऐसा जो गुणवत्ता में दूसरों से बेहतर हो। जो छात्र उच्च शिक्षा के द्वार पर खड़े हैं और अपने करियर का चयन करने के लिए तैयार हो रहे हैं, वे कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जैसे रोजगार के अवसरों की कमी, अनिश्चित भविष्य और कड़ी प्रतिस्पर्धा। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य परीक्षा दुश्चिंता के विभिन्न पहलुओं को जानना था, जिसमें लिंग और स्कूल के प्रकार के प्रभाव का भी विश्लेषण किया गया।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की परीक्षा संबंधी दुश्चिंता का अध्ययन

अध्ययन में प्रयुक्त चरों की संक्रियात्मक परिभाषा

परीक्षा की दुश्चिंता

परीक्षा की दुश्चिंता घटनात्मक, शारीरिक और व्यवहारिक प्रतिक्रियाओं का समूह है जो किसी परीक्षा या इसी तरह की मूल्यांकन स्थिति में संभावित नकारात्मक परिणामों या विफलता के बारे में दुश्चिंता के साथ होती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन के स्वरूप, प्रारूप, न्यादर्श के चुनाव से लेकर परिणाम तथा निष्कर्ष निकालने तक की समस्त प्रक्रिया का आधार शोध उद्देश्य में निहित होता है। शोधार्थी ने वर्तमान शोध के लिए निम्न उद्देश्य निर्धारित किए हैं—

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए उपरोक्त शोध उद्देश्यों को दृष्टिगत करते हुए शोधार्थी ने निम्न शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया है।

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध का सीमांकन

शोध क्षेत्र का परिसीमांकन शोधार्थी अपनी क्षमताओं आर्थिक, सामाजिक, नैतिक अवस्थाओं समयावधि, संसाधन एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर करता है। अत:, प्रस्तुत शोध कार्य की सीमाएं निम्न निर्धारित की गई है—

1- प्रस्तुत अध्ययन को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।

2- माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों का चयनित किया गया है।

3- प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 10 में पढ़ने वाले विद्यार्थी सम्मिलित किए गये हैं।

4- प्रस्तुत षोध अध्ययन में मधु अग्रवाल एवं वर्षा (2012) द्वारा तैयार परीक्षा दुश्चिंता के गैर—मौखिक परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

सम्बन्धित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

शर्मा, अर्चना (2023) ने अपना शोध पत्र **'उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की परीक्षा दुश्चिंता का अध्ययन'** विषय पर प्रस्तुत किया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मनुष्य कई प्रकार की दुश्चिंताओं से ग्रसित रहता है। यह मनुष्य के मस्तिष्क को चोट पहुंचाने के साथ—साथ शरीर को भी नुकसान पहुंचाती है। दुश्चिंता अवसाद, निराशा और दु:ख से जन्म लेती है। विद्यार्थी जीवन भी इससे अछूता नहीं है। इस शोध कार्य को जयपुर जिले के सरकारी व निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों पर किया गया। शोध अध्ययन के उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर निजी विद्यालय के छात्रों की तुलना में सरकारी विद्यालय के छात्रों में परीक्षा दुश्चिंता स्तर थोडा अधिक है। उपर्युक्त विधि के अनुसार सरकारी व निजी विद्यालय के छात्रों में जब अति उच्च परीक्षा दुश्चिंता का पर्सेंटाईल क्रमश: 92.02-92.02 प्राप्त हुआ। परन्तु जब उच्च स्तर के 25 प्रतिशत छात्रों का अवलोकन किया गया, तो ज्ञात हुआ कि निजी विद्यालयों के छात्रों की तुलना में सरकारी विद्यालय के छात्रों में परीक्षा दुश्चिंता अधिक है। इसी प्रकार निम्न स्तर के 25 प्रतिशत परिणाम का अवलोकन करने पर भी सरकारी विद्यालयों के छात्रों का परीक्षा दुश्चिंता स्तर अधिक रहा। अत: यह कहा जा सकता है कि सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की परीक्षा दुश्चिंता स्तर में सरकारी विद्यालयों में दुश्चिंता स्तर अधिक है।

अफशान, फातिमा (2022) 'माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में परीक्षा चिंता पर एक अध्ययन' परीक्षा चिंता एक स्व—निर्मित कारक है जो छात्रों और उनकी प्रदर्शन क्षमताओं को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। इसके कारण छात्र अपनी पूरी उत्पादकता नहीं दे पाते हैं, और परिणाम चिंताजनक हो सकते हैं। परीक्षा से संबंधित छात्रों की चिंता पर पहले भी कई शोध किए जा चुके हैं। इस स्थिति और इस क्षेत्र में किए गए पूर्व अध्ययनों को ध्यान में रखते हुए, भारतीय परिदृश्य में एक शोध अध्ययन करने का आधार शोधकर्ता को प्राप्त हुआ। इस अध्ययन का उद्देश्य हैदराबाद शहर के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में परीक्षा चिंता के स्तर को मापना था। शोध में एक तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया, जिसमें यादृच्छिक नमूना तकनीक का उपयोग करते हुए 120 छात्रों का चयन किया गया। इन छात्रों पर परीक्षा चिंता स्केल का उपयोग करके परीक्षण किया गया। आंकडों का

विश्लेषण स्वतंत्र ज.जमेज के माध्यम से किया गया ताकि परिकल्पनाओं की जांच की जा सके। अध्ययन के परिणाम— परिणामों ने यह दर्शाया कि माध्यमिक विद्यालय के लड़के और लड़कियों के बीच परीक्षा चिंता के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। परीक्षा चिंता के स्तर में ज्यादा भिन्नता भी नहीं पाई गई। लड़के और लड़कियां दोनों ही परीक्षा चिंता का अनुभव करते हैं, लेकिन यह चिंता इतनी महत्वपूर्ण नहीं है कि इसे प्रमुख अंतर के रूप में गिना जाए। निष्कर्ष—इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि परीक्षा चिंता लड़के और लड़कियों दोनों में समान रूप से मौजूद है। हालांकि, यह चिंता इतनी महत्वपूर्ण नहीं है कि इसे उनके प्रदर्शन या अनुभव के बीच एक बडा अंतर माना जाए। अध्ययन ने यह संकेत दिया कि परीक्षा चिंता को प्रबंधित करना छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को और बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

कौशल, विभूति और तिवारी, सविता (2021) 'परीक्षा के दौरान विद्यालय के छात्रों में चिंता पर एक अध्ययन' इस अध्ययन में उत्तराखंड के देहरादून स्थित सह—शिक्षा वाले विद्यालयों के 10वीं, 11वीं और 12वीं कक्षाओं के छात्रों में परीक्षा चिंता के प्रसार को समझने के लिए एक मात्रात्मक शोध किया गया। कुल 100 छात्रों को इस अध्ययन के लिए चुना गया, जिसमें 50 लडके और 50 लडकियां शामिल थीं। अध्ययन में 'वेस्टसाइड टेस्ट एंग्जायटी स्केल' का उपयोग किया गया। परिणाम— अध्ययन से पता चला कि लडके और लडकियां दोनों ही परीक्षा चिंता का अनुभव करते हैं। हालांकि, लडकों में परीक्षा चिंता का स्तर लडकियों की तुलना में अधिक पाया गया। कुल 100 छात्रों में से 54 छात्र उच्च सामान्य परीक्षा चिंता और मध्यम उच्च परीक्षा चिंता से पीडित पाए गए। इनमें से 24 लडकियां और 30 लडके थे। कक्षा 10वीं, 11वीं और 12वीं के विभिन्न स्तरों पर चिंता अलग—अलग पाई गई, और लडकों में अत्यधिक परीक्षा चिंता का स्तर अधिक देखा गया। निष्कर्ष— अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि परीक्षा चिंता छात्रों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। एक तनाव—मुक्त विद्यालय वातावरण छात्रों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। स्कूल प्रबंधकों, स्कूल काउंसलर्स और छात्रों के माता—पिता को किशोरों की भावनाओं और समस्याओं को समझने के लिए लचीला दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। विद्यालय का माहौल छात्रों के लिए आरामदायक और मित्रतापूर्ण बनाया जाना चाहिए।

शोध विधि एवं शोध प्रक्रिया

शोधार्थी द्वारा चयनित की गई अनुसंधान समस्या 'माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में परीक्षा संबंधी दुश्चिंता का अध्ययन' एक अप्रयोगात्मक अध्ययन है जिसकी प्रकृति वर्णनात्मक है। अत: शोध समस्या व साहित्य का विश्लेषण करने के पश्चात शोधार्थी ने वर्णात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि चयन करने का निर्णय लिया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या मेरठ जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालय सम्मलित हैं।मेरठ जिले के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को अनुसंधान कार्य हेतु चयन किया गया है। अत: मेरठ जिले के माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 10 में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी इस शोध कार्य की जनसंख्या है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रतिदर्श

वर्तमान अध्ययन के लिए न्यादर्श में माध्यमिक स्तर के 05 स्कूलों से 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर

- परीक्षा संबंधी दुश्चिंता

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

परीक्षा दुश्चिंता परीक्षण (2012)

आंकड़ों के संग्रहण हेतु डॉ. मधु अग्रवाल एवं वर्षा कौशल द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत परीक्षा दुश्चिंता परीक्षण (2012) का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन में प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों जैसे— मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान आदि का प्रयोग किया है।

आंकड़ों का विश्लेषण

वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि द्वारा जो आंकड़े प्राप्त होते हैं, उनका विश्लेषण एवं विवेचन करना शोध कार्य की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। विश्लेषण के आधार पर ही शोधार्थी द्वारा शोध कार्य सम्बन्धी सही निष्कर्ष तथा उपलब्धि का निरूपण किया गया है।

उद्देश्य–1

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता का अध्ययन करना।

परिकल्पना– $H_0 1$

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या- 1.1

माध्यमिक स्तर के छात्र—छात्राओं के मध्य परीक्षा संबंधी दुश्चिंता का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मान	सार्थकता स्तर
छात्र	50	14.16	2.84	**3.52**	0.01
छात्रायें	50	15.94	2.17		

'टी' मूल्य 3.52 > तालिका मूल्य 2.58 (0.01 सार्थकता स्तर)

तालिका संख्या 1.1 के अर्न्तगत छात्र एवं छात्राओं की परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 3.52 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। उपरोक्त तालिका में निम्न मध्यमान 14.16 जो छात्रों का है तथा उच्च मध्यमान 15.94 जोकि छात्राओं का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में छात्राओं की परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता छात्रों की तुलना में उच्च स्तर की है।

अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना ($H_0 1$) 'माध्यमिक स्तर के छात्र—छात्राओं के मध्य परीक्षा संबंधी दुश्चिंता में सार्थक अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है। अर्थात छात्र एवं छात्राओं की परीक्षा संबंधी दुश्चिंता के मध्यमान में सार्थक अन्तर है।

उद्देश्य–2

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता का अध्ययन करना।

परिकल्पना– $H_0 2$

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या– 1.2

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता___का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मान	सार्थकता स्तर
सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी	50	17.13	2.26	**4.49**	0.01
गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी	50	19.23	2.41		

'टी' मूल्य 4.49 > तालिका मूल्य 2.58 (0.01 सार्थकत स्तर)

तालिका संख्या 4.2 के अर्न्तगत सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में परीक्षा संबंधी दुश्चिंता के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 4.49 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 19.23 जो गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का है तथा निम्न मध्यमान 17.13 जोकि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का

मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का उच्च स्तर का है।

अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना (H_02) 'सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता में सार्थक अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है। सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष–

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता से सम्बन्धित प्रमुख निष्कर्ष निम्न है—

परिणामों के विष्लेषण के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता में सार्थक भिन्न्ता पायी गयी। सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता में सार्थक भिन्नता पायी गयी है। अर्थात् माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की परीक्षा सम्बन्धी दुश्चिंता सार्थक भिन्नता पायी जाती है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची—

- चौपल, ब्लैंडिंग, ताकाहाशी, गुबी और कॉन (2005) 'परीक्षा की चिंता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध', जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन एजुकेशन, 13, 123—128।
- पाठक, पी०डी० 'शिक्षा मनोविज्ञान' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- शर्मा, आर०ए० (2017) 'शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व' आर०लाल पब्लिकेशन, मेरठ।
- Ketan Pani, M. (2006) 'Anxiety disorders in Children and Adolescents', Journal of Abnormal and Social Psychology, 44, 221-231
- Mary, R.A., Marslin, G., Franklin, G. and Sheeba, C.J. (2014) 'Test anxiety levels of board exam going students in Tamil Nadu', India. Bio Med Research International, Volume 20, Article ID 578323, pp. 1-9, Hindawi Publishing Corporation.
- Martin, G., & Pear, J. (2003) 'Behavior modification: What it is and how to do it'. Upper Saddle River, NJ: Prentice Hall.
- शाकिर, डा०मौहम्मद (2014) 'एकादमिक एंग्जाइटी एज से कोरिलेट ऑफ एकाडमिक एचीवमेन्ट' आई०आई०एस०टी०ई०, आई०एस०एस०एन० 2222-1735, वॉल्यूम—5, इश्यू.10